P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-8, ISSUE-4 May -2020
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

बिहार के जहानाबाद जिला के मोदनगंज प्रखण्ड में ग्रामीण सेवा केन्द्रों का विकास : एक भौगोलिक अध्ययन

Development of Rural Service Centres in Modanganj Block of Jehanabad District of Bihar : A Geographical Study

Paper Submission: 19/05/2020, Date of Acceptance: 29/05/2020, Date of Publication: 30/05/2020

विवेक कुमार
अतिथि सहायक प्राध्यापक,
भूगोल विभाग,
बी0आर0बी0 कॉलेज,
समस्तीपुर,
ल0 न0 मिथिला
विश्वविद्यालय, दरभंगा
बिहार, भारत

सारांश

मोदनगंज बिहार के जहानाबाद जिला के दक्षिण–पूर्वी भाग में स्थित कृषि प्रधान प्रखण्ड है। जनगणना 2011 के अनुसार इस प्रखण्ड का कुल क्षेत्रफल 7946 हेक्टेयर है, जिसमें कुल 55 गाँव बसे हुए हैं। प्रखण्ड की कुल जनसंख्या 87718 है। यहाँ के अधिकांश लोग विशेषीकृत सेवाओं के लिए अपने जिला मुख्यालय जहानाबाद, राजधानी पटना एवं गया जैसे नगरीय केन्द्रों पर निर्भर रहते हैं। तथा अन्य विभिन्न प्रकार (जैसे–स्वास्थ्य, बाजार, बैंकिंग, शैक्षणिक एवं परिवहन तथा संचार आदि) की सामान्य सेवाओं के लिए निकटवर्ती ग्रामीण सेवा केन्द्रों पर ही निर्भर रहते हैं। अध्ययन क्षेत्र के मुख्यतः सात ग्रामीण केन्द्र ही "ग्रामीण सेवा केन्द्र" के रूप में अपने प्रभाव क्षेत्र के लोगों को विभिन्न प्रकार के सामान्य स्तर की सेवाएँ प्रदान करा रहे हैं तथा सात ऐसे ग्रामीण केन्द्रों की भी पहचान की गई है जो आने वाले समय में पूर्ण ग्रामीण सेवा केन्द्र के रूप में विकसित हो सकते हैं। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है ग्रामीण सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास के लिए उपयुक्त दशाओं का पता लगाना। यह अध्ययन कार्य मुख्यतः द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। इस प्रखण्ड में स्थित ग्रामीण सेवा केन्द्रों जैसे–ओकरी, मोदनगंज, बंधुगंज आदि का विकास में अलग–अलग तत्वों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जो अपने प्रभाव क्षेत्र के लोगों को विभिन्न प्रकार जैसे–प्रशासनिक, स्वास्थ्य, शैक्षणिक, वाणिज्यिक, बैंकिंग, परिवहन, संचार आदि की सेवाएँ प्रदान करा रहे हैं। इन ग्रामीण सेवा केन्द्रों के प्रभाव में ग्रामीण क्षेत्रों का आशातीत विकास हुआ है। इस प्रकार निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास में प्राकृतिक कारक के साथ–साथ मानवीय कारक जैसे–जनसंख्या, परिवहन एवं संचार के साधन, प्रशासनिक केन्द्र, शैक्षणिक संस्थान, स्वास्थ्य केन्द्र आदि का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

Modanganj is an agriculture dominated C.D.Block situated in south-east part ofJehanabaddistrict of Bihar. According to census - 2011 total Area of this C.D.Block is 7946hectare in which total 55 villages are settled.Total population of this C.D.Block is 87718. Maximum people of this region depends upon district headquarter Jehanabad, Gaya and capital Patna like urban centres fortheire specialised services and for the different type of general services (Ex.–Health, Market, Banking, Educational and Transport & Communication etc.) they depend upon Rural Service Centres. Only 07 Rural centres of the study area are working as Rural Service Centres and providing different types of general services to the people of their service area.And seven Prospective Rural Service Centres have been also recognised.The main objective of this study is to find out the the appropriate elements for the evolution and development of Rural Service Centre.This studyis mainly based on Secondary data and some Primary data also.Different factors are responsible in the development of Rural Service Centres, like - Okari, Modanganj, Bandhuganj etc, which are providing various types of services (Ex.–Administrative, Health, Educational, Commercial,Transport & communication etc.) to the people of their surrounding area.There is promising development of rural area in the influence of the Rural Service Centres, so in conclusive way, it can be said that in the evolution and development of Rural Service Centres, there is important contribution of natural factors as well as human factors like–Population, Means of Transport & Communication, Administrative centre, Educational institution, Health centre etc.

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-8, ISSUE-4 May -2020
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

मुख्य शब्द : ग्रामीण सेवा केन्द्र, सेवा केन्द्रों का प्रभाव, जनसंख्या।
Rural Service Centre, Effect of Service Centre, Population.

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध–पत्र "बिहार के जहानाबाद जिला के मोदनगंज प्रखण्ड में ग्रामीण सेवा केन्द्रों का विकास" मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्र में नगरीय सुविधाओं की उपलब्धता से संबंधित है। कुछ ग्रामीण केन्द्रों में दो–तीन नगरीय सुविधाएँ उपलब्ध होती है, जिसके कारण वे अपने आस–पास की ग्रामीण जनसंख्या को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। आरंभिक काल में ये केन्द्र कुछ सेवाएँ ही प्रदान कराते हैं, परंतु समय के साथ सेवाओं की संख्या एवं सेवा प्रदान करने की क्षमता में वृद्धि होता चला जाता है और ये केन्द्र एक ग्रामीण सेवा केन्द्र के रूप में विकसित होते हैं। इस प्रकार इसके क्षेत्रीय विस्तार एवं प्रभाव क्षेत्र में भी वृद्धि होता है। सेवा केन्द्र की अवधारणा अत्यंत नूतन है। इसे दो वर्गों–नगरीय सेवा केन्द्र एवं ग्रामीण सेवा केन्द्र, के रूप में वर्गीकृत कर अध्ययन करना ज्यादा उपयुक्त माना जाता है। नगरीय सेवा केन्द्र से तात्पर्य उन नगरीय केन्द्रों से है जो नगरीय क्षेत्र के अलावे अपने आस–पास के ग्रामीण क्षेत्रों को भी विभिन्न प्रकार (जैसे–प्रशासनिक, शैक्षणिक, स्वास्थ्य, परिवहन एवं संचार आदि) तथा विभिन्न स्तर (सामान्य एवं विशेष) की सेवाएँ प्रदान कराता हो। जबकि ग्रामीण सेवा केन्द्रों से तात्पर्य ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित उन ग्रामीण केन्द्रों से है, जहाँ सामान्य स्तर की कुछ नगरीय सुविधाएँ आम लोगों के लिए उपलब्ध हो। चूँकि हमारा देश गाँवों का देश है। यहाँ की कुल जनसंख्या का लगभग 68 प्रतिशत लोग गाँवों में निवास करते हैं तथा अध्ययन क्षेत्र "मोदनगंज प्रखण्ड", बिहार जैसे पिछड़े राज्य के जहानाबाद जिला के पूर्वोत्तर भाग में स्थित कृषि प्रधान प्रखण्ड है। अतः यहाँ के ग्रामीण सेवा केन्द्रों के संदर्भ में अध्ययन करना आवश्यक है।

मोदनगंज प्रखण्ड का कुल क्षेत्रफल 7946 हेक्टेयर है, जहाँ कुल 87718 व्यक्ति निवास करते हैं। यहाँ के अधिकांश लोग अपने जीविकोपार्जन के लिए कृषि पर ही निर्भर है। इस प्रखण्ड में कुल 55 गाँव हैं, जिसमें से केवल 7 गाँवों का विकास पूर्ण ग्रामीण सेवा केन्द्र के रूप में हुआ है एवं 7 अन्य गाँवों को भविष्य में पूर्ण ग्रामीण सेवा केन्द्र के रूप में विकसित होने की संभावना है, जहाँ आस–पास के अधिकांश लोग अपनी सामान्य एवं दैनिक सेवाओं की प्राप्ति के लिए आते हैं तथा विशेषीकृत सेवाओं के लिए लोग जिल मुख्यालय जहानाबाद, गया एवं राजधानी पटना जैसे नगरीय केन्द्रों पर निर्भर रहते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है–ग्रामीण सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास के संदर्भ में सूक्ष्म स्तर पर अध्ययन करना।

परिकल्पना

किसी यातायात सुविधा संपन्न केन्द्र पर एक–दो सुविधाएँ भी उपलब्ध होने पर वह केन्द्र धीरे–धीरे एक पूर्ण ग्रामीण सेवा केन्द्र के रूप में विकसित हो जाता है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र "मोदनगंज प्रखण्ड" बिहार की राजधानी पटना के दक्षिण में स्थित जहानाबाद जिला के पूर्वोत्तर भाग में स्थित है। मोदनगंज प्रखण्ड के उत्तर में पटना जिला एवं दक्षिण में घोषी प्रखण्ड, पूरब में नालंदा जिला एवं पश्चिम में काको प्रखण्ड स्थित है। मोदनगंज प्रखण्ड का अक्षांशीय विस्तार $25^0$12′00″ उत्तर से $25^0$18′48″ उत्तरी अक्षांश तक तथा देशान्तरीय विस्तार $85^0$05′31″ पूरब से $85^0$11′42″ पूर्वी देशान्तर तक है। इसका कुल क्षेत्रफल 7946 हेक्टेयर जो जहानाबाद जिला के कुल क्षेत्रफल (93209 हेक्टेयर) का 8.52 प्रतिशत है। जनगणना 2011 के अनुसार इस प्रखण्ड में कुल 55 गाँव हैं तथा प्रखण्ड की कुल जनसंख्या 87718 है जो जहानाबाद जिले की कुल जनसंख्या (1125313) का 7.79 प्रतिशत है।

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-8, ISSUE-4 May -2020
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

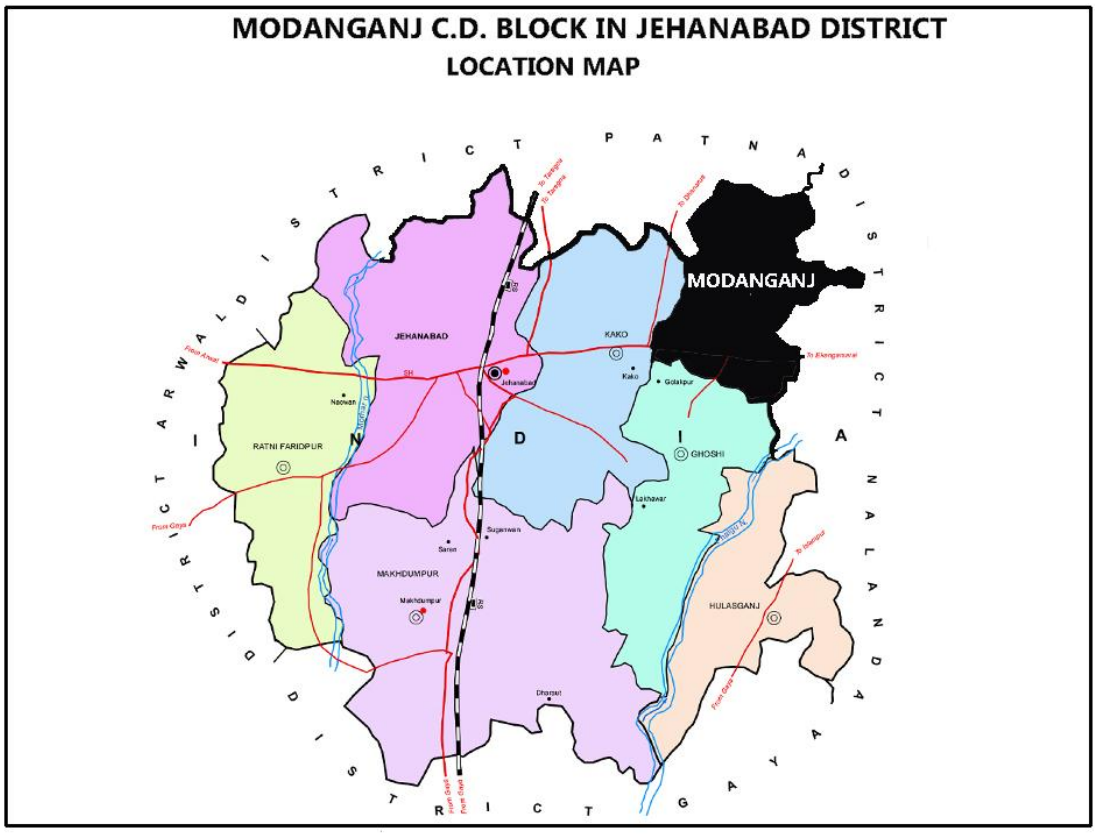

विधितंत्र

इस शोध–कार्य में मुख्यतः द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है, परंतु क्षेत्र सर्वेक्षण के दौरान लोगों से पूछ–ताछ एवं स्वावलोकन से प्राप्त अनुभवों का भी विषय–वस्तु का विश्लेषण में प्रयोग किया गया है। द्वितीयक आँकड़ें जनगणना कार्यालय पटना, जहानाबाद जिले के सांख्यिकी विभाग, अंचल कार्यालय मोदनगंज, इन्टरनेट, शोध पत्रिकाएँ एवं पुस्तकों से प्राप्त किया गया है एवं इन आँकड़ों को सामान्य गणितीय गणना एवं प्रतिशत विधि का प्रयोग कर क्रमबद्ध रूप से विश्लेषण कर उन्हें मानचित्र एवं तालिका के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

साहित्यावलोकन

ग्रामीण सेवा केन्द्रों का अध्ययन मुख्यतः वैसे ग्रामीण केन्द्रों से सम्बन्धित है, जहाँ विभिन्न प्रकार के द्वितीयक एवं त्रितीयक आर्थिक क्रियाविधि क्रियान्वित हो रहा है। ऐसे ग्रामीण केन्द्र एक छोटे गाँव से लेकर बड़े कस्बा के रूप में हो सकता है। अतः वर्तमान अध्ययन के लिए पूर्व में किये गये कुछ महत्वपूर्ण कार्यों का पुनरावलोकन किया गया है। इस संदर्भ में मद्रास विश्वविद्यालय के कृष्णन (1933), डॉन (1939) एवं स्वामीनाथन (1928) महोदय द्वारा किया गया कार्य महत्वपूर्ण है। स्वामीनाथन महोदय का कार्य मुख्य रूप से नगरीय केन्द्र के आंतरिक समस्याओं, नगरीय भूमि–उपयोग एवं आकृति संबंधी तत्वों के अध्ययन से संबंधित है, जबकि कृष्णन महोदय का अध्ययन मुख्य रूप से छोटे सेवा केन्द्रों में किराया, बाजार एवं उत्सव पर केन्द्रित है तथा डॉन एवं कटियार महोदय द्वारा किये गये कार्य सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति, विकास एवं वितरण से संबंधित है। देशपाण्डे (1941) एवं सुब्रमन्यम (1941) महोदय भी नगरीय केन्द्रों की उत्पत्ति, विकास एवं वितरण का अध्ययन किये हैं। बाल्टर क्रिस्टॉलर (1932) का 'द–सेन्ट्रल प्लेस थ्योरी' तथा दक्षिणी जर्मनी में अधिवासों की संरचना पर किये गये कार्य का भी ग्रामीण सेवा केन्द्रों के विकास से संबंधित अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन सबके अलावे के०एन० सिंह (1961), एस०एन०पी० जायसवाल, आर०एस० लाल (1968) और ए० लाल (1968) ने पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुछ केन्द्रों के उत्पत्ति एवं सेवा क्षेत्र में हुए बदलाव अर्थात् विकास का गहन अध्ययन प्रस्तुत किया है। अमृत लाल (1966) एवं एस०एस० जायसवाल (1964) ने भी पश्चिमी हिमालय एवं सतलज–यमुना दोआव के ग्रामीण सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास पर महत्वपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत किया है तथा हाल के कुछ वर्षों में पटना विश्वविद्यालय के एम०एम०पी० सिन्हा (1942), वी०एन०पी० सिन्हा (1976) एवं एल०के०पी० सिंह (1984) का भी ग्रामीण सेवा केन्द्रों के उत्पत्ति एवं विकास के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है तथा वर्तमान में अनील कुमार (2007), विश्वविजय कुमार (2010) एवं विवेक कुमार (2019) का भी ग्रामीण सेवा केन्द्रों के विकास के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

ग्रामीण सेवा केन्द्रों को चयन करने के तरीके

विभिन्न विद्वानों ने ग्रामीण सेवा केन्द्रों के चयन करने के लिए अलग–अलग विधियों का प्रयोग किया है।

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-8, ISSUE-4 May -2020
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

एस०पी० जायसवाल महोदय ने अपने अध्ययन में ग्रामीण सेवा केन्द्रों का निर्धारण के लिए पाँच शर्तों को आधार बनाया है, जिसमें से कम से कम तीन शर्तों को पूरा करने वाले ग्रामीण केन्द्रों को पूर्ण स्थापित ग्रामीण सेवा केन्द्र के रूप में माना है तथा कम से कम दो शर्तों को पूरा करने वाले ग्रामीण केन्द्रों को संभावित ग्रामीण सेवा केन्द्र के रूप में रखा है। जबकि विवेक कुमार ने अपने शोध कार्य (विवेक कुमार, Research Journal of Social & Life Sciences, Vol. XXVI) में ग्रामीण सेवा केन्द्रों को चिन्हित करने के लिए सात शर्तों को आधार बनाया है, जिसमें से कम से कम पाँच शर्तों को पूरा करने वाले ग्रामीण केन्द्र को पूर्ण स्थापित ग्रामीण सेवा केन्द्र एवं कम से कम चार शर्तों को पूरा करने वाले ग्रामीण केन्द्रों को संभावित ग्रामीण सेवा केन्द्र के श्रेणी में रखा गया है। अतः प्रस्तुत अध्ययन में भी ग्रामीण सेवा केन्द्रों का चयन विवेक कुमार द्वारा बताये गये विधियों के आधार पर किया गया है। ग्रामीण सेवा केन्द्रों का निर्धारण के लिए विवेक कुमार द्वारा सुझाये गये सात शर्तें निम्नांकित हैं–

1. सेवा प्रदान करने वाले गाँवों की जनसंख्या कम से कम 1500 होना चाहिए।
2. सेवा प्रदान करने वाले गाँवों की कुल कार्यिक जनसंख्या का कम से कम 15 प्रतिशत मुख्य कार्यिक जनसंख्या गैर–कृषि कार्यों में संलग्न हो।
3. वैसे केन्द्रीय स्थल जहाँ कम से कम एक मध्य विद्यालय या अन्य उच्च्तर शैक्षणिक संस्थान उपलब्ध हो।
4. जहाँ पंजीकृत डॉक्टर या दवाखाना उपलब्ध हो।
5. जहाँ जनोपयोगी संस्थानों जैसे–प्रखण्ड कार्यालय, थाना, ए.टी.एम., बैंक, नियमित बाजार, साइबर कैफे आदि में से कम से कम एक मौजूद हो।
6. जहाँ अपने आस–पास के लोगों की जरूरत की आवश्यक वस्तुएँ मिलती हो।
7. परिवहन एवं संचार के साधन जैसे–रेलवे स्टेशन, बस स्टैण्ड, डाकघर आदि में से कम से कम एक साधन मौजूद हो।

इस प्रकार उपरोक्त शर्तों के आधार पर मोदनगंज प्रखण्ड मं स्थित सात ग्रामीण केन्द्रों को संभावित ग्रामीण सेवा केन्द्र एवं सात अन्य ग्रामीण केन्द्रों को पूर्ण स्थापित ग्रामीण सेवा केन्द्रों के रूप में चयन किया गया है जो अपने एवं आस–पास के क्षेत्रों को विभिन्न प्रकार के सेवाएँ प्रदान करा रहे हैं।

तालिका संख्या–क

मोदनगंज प्रखण्ड में स्थित पूर्ण स्थापित ग्रामीण सेवा केन्द्र (2011)

Sl. No.	Village Code	Village Name	Panchayat Name	Total Population
1	260339	Gandhar	Gandhar	4056
2	260349	Jalalpur	Okari	2499
3	260355	Okari	Okari	2604
4	260367	Jaitipur Kurua	Jaitipur Kurua	5544
5	260371	Naiawan	Naiawan	2440
6	260380	Modanganj	Gobindpur (Modanganj)	4175
7	260387	Bandhuganj	Bandhuganj	4048

Source : Census of India, 2011

तालिका संख्या–ख

मोदनगंज प्रखण्ड में स्थित संभावित ग्रामीण सेवा केन्द्र (2011)

Sl. No.	Village Code	Village Name	Panchayat Name	Total Population
1	260336	Waina	Gandhar	3085
2	260347	Sarishtabad	Sarishtabad	3962
3	260357	Dewara	Dewara	3972
4	260359	Tanrwa	Dewara	1855
5	260363	Masarh Nisf	Jaitipur Kurua	1970
6	260370	Pitamberpur	Naiwan	2206
7	260378	Charui	Gobindpur (Modanganj)	2436

Source : Census of India, 2011

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-8, ISSUE-4 May -2020
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

तालिका संख्या–ग

Service Centres in Modanganj C.D. Block : Status of Services

Sl. No.	Village Name	Population of Village	Middle School	Secondary School	S. Scondary School	Degree College	Post Office	Cyber Cafe	Bus Stand	Bank/ATM	Regular Market	Health Centre	Total Worker (in%)	Population of main Workers	Population of Non-Agricultural Main Worker	Administrative Offices (Block Office/P.S. etc.)
1	Gandhar	4056	Y	N	N	N	Y	Y	Y	N	N	N	1197 (29.5%)	740 (18.2%)	86 (11.62%)	N
2	Jalalpur	2499	Y	N	N	N	N	Y	N	N	N	Y	699 (27.9%)	626 (25.0%)	55 (8.79%)	N
3	Okari	2604	Y	Y	Y	Y	Y	Y	Y	Y	Y	Y	887 (34.0%)	782 (30.0%)	123 (19.73%)	Y
4	Jaitipur Kurua	5544	N	Y	Y	N	Y	Y	N	N	Y	Y	1670 (30.1%)	1154 (20.8%)	250 (21.66%)	N
5	Naiawan	2440	Y	Y	N	N	Y	Y	N	N	Y	Y	813 (33.3%)	649 (26.5%)	31 (4.78%)	N
6	Modanganj	4175	Y	N	N	N	Y	Y	N	Y	Y	Y	1293 (30.9%)	918 (21.9%)	283 (30.83%)	Y
7	Bandhuganj	4048	Y	Y	N	N	Y	Y	Y	Y	Y	Y	1359 (33.5%)	1301 (32.1%)	243 (32.51%)	N

Source : Census of India, 2011

ग्रामीण सेव केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास

सामान्यतः ऐसा देखा गया है कि ग्रामीण सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास के मूल कारक समान होते हैं। परंतु ग्रामीण सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति के समय कुछ कारक ज्यादा सक्रिय होता है तो कुछ कारक अनुपस्थित रहता है। जबकि विकास के समय कमोवेस सभी कारक सक्रिय रहता है। ग्रामीण सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति के मूल में आर्थिक क्रियाकलापों के साथ–साथ प्रशासकीय, सांस्कृतिक एवं दैनिक आवश्यकताएँ मूलभूत कारक हैं। परंतु इसके अलावा प्राकृतिक, सामाजिक तथा राजनैतिक कारक तथा प्राथमिक क्रियाकलाप (कृषि) से संबंधित कार्यों का संपादन के लिए आवश्यक तत्व भी ग्रामीण सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कालांतर में द्वितीयक एवं तृतीयक क्रियाकलाप सेवा केन्द्रों के विकास को गति प्रदान करता है।

हालांकि "वर्तमान समय में सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति मुख्यतः दो तरह से होती है, पहला यह कि किसी जगह पर शैक्षणिक संस्थान, प्रशासनिक केन्द्र, चिकित्सालय, दवाखाना, बस स्टैण्ड, रेलवे स्टेशन आदि में से एक–दो सुविधाएँ भी उपलब्ध होते हैं तो धीरे–धीरे उन सेवाओं से संबंधित अन्य सुविध केन्द्र भी वहाँ स्थापित हो जाते हैं और वह एक सेवा केन्द्र के रूप में परिणत हो जाता है तथा दूसरा यह कि किसी चौक–चौराहा पर या किसी गाँव में एक्का–दुक्का दुकानें, साप्ताहिक बाजार, साइबर कैफे, नाई–धोबी की दुकान आदि छोटी–मोटी सुविधाएँ प्रदान करने वाले केन्द्रों का आकार, सेवा प्रदान करने की क्षमता आदि में धीरे–धीरे वृद्धि होते रहने के कारण वो सुविधा केन्द्र अंततः एक पूर्ण ग्रामीण सेवा केन्द्र के रूप में विकसित हो जाता है।" (विवेक कुमार, Research Journal of Social and Life Sciences, Vol. XXVI)। 'बेरी' महोदय ने बताया कि किसी पारिवारिक इकाई या निकटतम सामाजिक वर्ग द्वारा वस्तु एवं सेवाओं का पारस्परिक आदान–प्रदान अथवा विनिमय व्यवस्था के कारण केन्द्र स्थल या बाजार स्थलों की उत्पत्ति होती है। हालांकि अध्ययन क्षेत्र मोदनगंज प्रखण्ड में ग्रामीण सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास क्रिस्टॉलर का केन्द्रीय स्थल सिद्धांत के आधार पर नहीं हुआ है।

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-8, ISSUE-4 May -2020
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

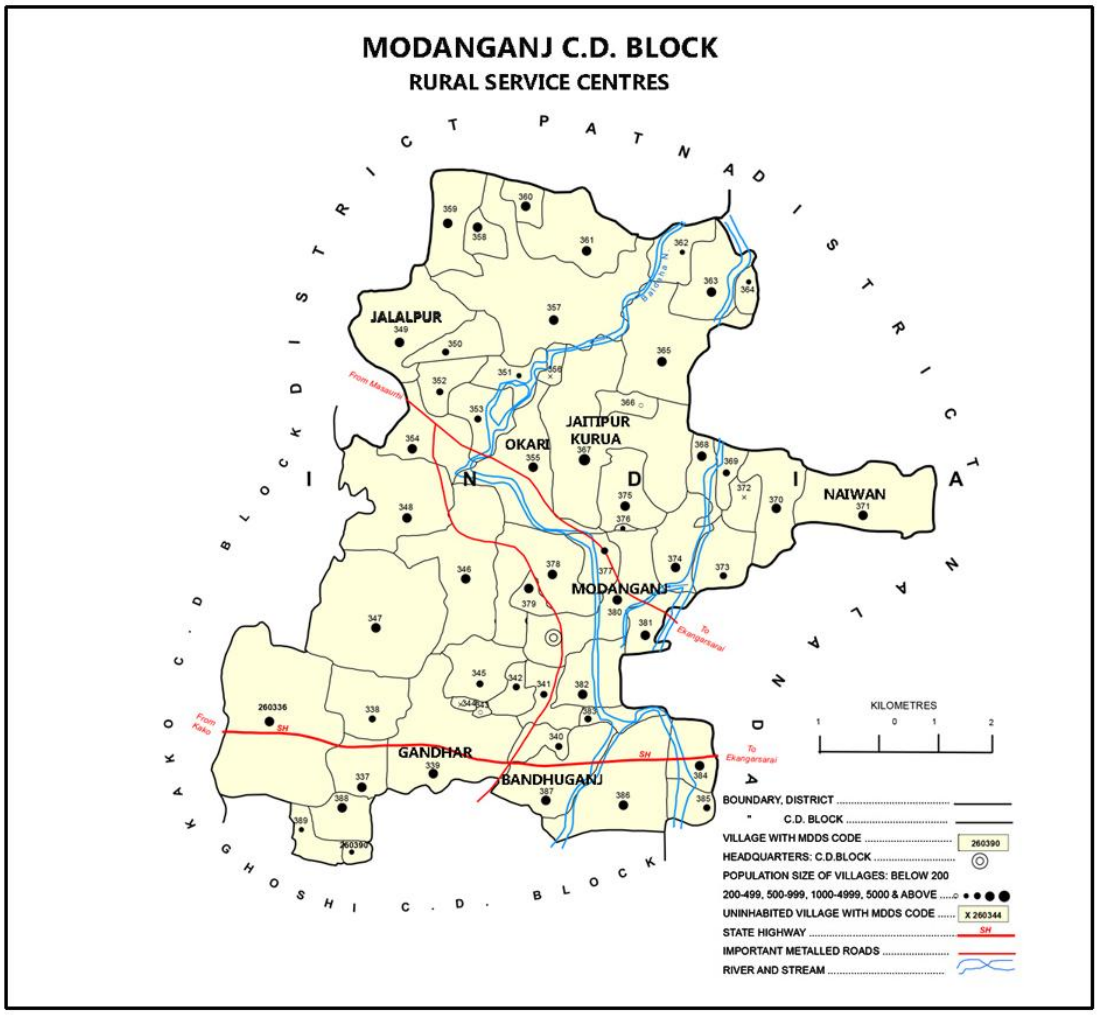

इस प्रकार उपरोक्त अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण सेवा केन्द्र मानवीय सृजन जरूर है, परंतु इसके उत्पत्ति स्थल का प्रारम्भिक आधार प्राकृतिक कारक ही निर्धारित करते हैं। इन्हीं प्राकृतिक कारकों द्वारा प्रदत्त सुविधाओं एवं सीमाओं के मूल आधार पर मानवीय कारक सेवा केन्द्रों के विकास के लिए विभिन्न प्रकार के क्रियाकलाप करना प्रारंभ करता है। अर्थात् क्षेत्र की भूमि, उच्चावच, धरातल की प्रकृति, नदी, पर्वत, वनस्पत्ति एवं जलवायु आदि प्राकृतिक कारक सेवा केन्द्रों के वितरण को प्रभावित करता है। इस प्रकार सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारकों को दो वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है–(1) प्राकृतिक कारक एवं (2) मानवीय कारक।

प्राकृतिक कारक

ग्रामीण सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास को निर्धारित करने वाले प्राकृतिक कारकों में संबंधित क्षेत्र की उच्चावच, धरातल की प्रकृति, मिट्टी की उर्वरता, स्वच्छ जल की उपलब्धता आदि प्रमुख हैं। सामान्यतः सेवा केन्द्र की उत्पत्ति या तो अधिवासीय क्षेत्र में या अधिवासीय केन्द्र के नजदीक में होता है, क्योंकि सेवा केन्द्र के उत्पत्ति के लिए सेवा प्राप्त करने वालों का होना जरूरी है और लोग वैसे क्षेत्र को अधिवास के लिए चयन करते हैं जहाँ जीवन–यापन के साधन अर्थात् उपजाऊ भूमि पास में ही उपलब्ध हों एवं स्वच्छ जल भी प्राचूर मात्रा में उपलब्ध हों तथा आस–पास की तुलना में ऊँचा भूभाग हो, जिससे कि बाढ़ के प्रभाव से सुरक्षित रहा जा सके। अध्ययन क्षेत्र मोदनगंज प्रखण्ड प्राकृतिक रूप से समतल मैदानी भाग है, जिसका ढाल दक्षिण से उत्तर की ओर है। प्रखण्ड का पूर्वोत्तर भाग बरसात के मौसम में बाढ़ से प्रभावित रहता है परंतु इसका अधिवासीय केन्द्रों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है एवं प्रखण्ड के लगभग संपूर्ण क्षेत्र में एक जैसी उपजाऊ मिट्टी मिलती है तथा भूमिगत जल भी पूरे प्रखण्ड में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। इस प्रकार ग्रामीण सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति के लिए पूरे प्रखण्ड में समान प्राकृतिक दशाएँ उपलब्ध हैं। फिर भी यह देखा गया है कि प्रखण्ड के अधिकांश ग्रामीण सेवा केन्द्रों (जैसे–ओकरी, मोदनगंज, बंधुगंज आदि) की स्थिति नदी तटीय ही है।

मानवीय कारक

सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास में मानवीय कारकों का विशेष योगदान होता है। परंतु प्राकृतिक एवं मानवीय दोनों तत्व सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास के लिए एक–दूसरे के पूरक के रूप में कार्य करते हैं। सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति के मूल में आर्थिक शक्तियों का ही विशेष स्थान होता है। किन्तु इसके साथ–साथ

ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, प्रशासनिक एवं राजनैतिक शक्तियाँ भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ग्रामीण सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास को निर्धारित करने वाले कुछ महत्वपूर्ण मानवीय कारक निम्नांकित हैं–

1. जनसंख्या
2. परिवहन एवं संचार के साधन
3. आर्थिक क्रियाकलाप
4. शैक्षणिक संस्थान
5. स्वास्थ्य केन्द्र
6. प्रशासनिक केन्द्र
7. धार्मिक केन्द्र

जनसंख्या

ग्रामीण सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास के लिए जनसंख्या एक महत्वपूर्ण कारक है। किसी भी सेवा केन्द्र पर विभिन्न प्रकार की सेवाओं का नियमित सम्पादन के लिए एक न्यूनतम जनसंख्या का होना अतिआवश्यक है। इसके साथ–साथ उक्त सेवा केन्द्र से सेवाएँ प्राप्त करने वाले लोगों की संख्या भी पर्याप्त होनी चाहिए ताकि सेवा प्रदान करने में संलग्न लोगों को अपने जीविकोपार्जन के लिए नियमित रूप से पर्याप्त आमदनी होता रहे। इससे यह स्पष्ट होता है कि सघन बसाव वाले क्षेत्रों में ग्रामीण सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति कम दूरी पर ही हो जाती है एवं उनका विकास भी तेजी से होता है। जनगणना 2011 से प्राप्त आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण सेवा केन्द्र के रूप में कार्यरत एवं संभावित ग्रामीण सेवा केन्द्रों की जनसंख्या 2000 से अधिक है एवं सात कार्यरत ग्रामीण सेवा केन्द्रों में से चार सेवा केन्द्रों (मोदनगंज, बंधुगंज, गंधार एवं जैतिपुर कुरुआ) की जनसंख्या तो चार हजार से भी अधिक है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र मोदनगंज प्रखण्ड में ग्रामीण सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास में जनसंख्या का महत्वपूर्ण योगदान है।

परिवहन एवं संचार के साधन

परिवहन एवं संचार के साधन न केवल ग्रामीण सेवा केन्द्रों के उद्‌भव एवं विकास में ही सहायक होते हैं, बल्कि ये समन्वित ग्रामीण विकास की प्रक्रिया को भी प्रभावित करता है। अध्ययन क्षेत्र मोदनगंज प्रखण्ड के दक्षिणी भाग से होकर राजकीय उच्च पथ (SH)-110 गुजरती है, जो जहानाबाद जिला मुख्यालय से बंधुगंज होते हुए एकंगरसराय को जोड़ती है एवं एक अन्य महत्वपूर्ण सड़क "मसौढ़ी–इमलीया–तेलहाड़ा" मोदनगंज प्रखण्ड के लगभग बीचों–बीच से होकर गुजरती है। इसी सड़कमार्ग पर अध्ययन क्षेत्र के सबसे बड़े ग्रामीण सेवा केन्द्र ओकरी स्थित है। इसके अलावे प्रखण्ड के अधिकांश गाँव अन्य ग्रामीण सड़कों के माध्यम से मुख्य सड़कों से जुड़ी हुई है। परंतु प्रखण्ड में रेलवे की सुविधा नहीं है, अतः यहाँ के लोग जहानाबाद या मसौढ़ी रेलवे स्टेशन से रेलवे की सुविधाएँ प्राप्त करते हैं। यदि संचार के साधनों की बात करें तो हम पाते हैं कि मोदनगंज प्रखण्ड में स्थित सात कार्यरत ग्रामीण सेवा केन्द्रों में से छः में डाकघर की सुविधा उपलब्ध है एवं सभी सेवा केन्द्रों में साइबर कैफे की सुविधा उपलब्ध है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि यहाँ अधिकांश ग्रामीण सेवा केन्द्रों का विकास वैसे ग्रामीण केन्द्रों में हुआ है, जहाँ से होकर कोई न कोई महत्वपूर्ण सड़क गुजरती है। इसके साथ–साथ परिवहन मार्गों के विकास से नवनिर्मित चौक–चौराहे पर भी धीरे–धीरे सेवा केन्द्रों का विकास हो जाता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास में परिवहन के साधनों का महत्वपूर्ण भूमिका होता है।

आर्थिक क्रियाकलाप

अध्ययन क्षेत्र में सामान्यतः ऐसा पाया गया है कि वैसे गाँव जिसकी स्थिति केन्द्रीय है एवं वहाँ परिवहन एवं संचार के साधन पहले से ही उपलब्ध हैं, का उद्‌भव ग्रामीण सेवा केन्द्र के रूप में हुआ है एवं बाद में विभिन्न प्रकार के आर्थिक गतिविधियाँ जैसे–नियमित बाजार, बैंकिंग सेवाएँ, विभिन्न प्रकार की दुकानें आदि की शुरूआत हुई है और वह केन्द्र एक बड़े ग्रामीण सेवा केन्द्र के रूप में विकसित हुआ है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि ग्रामीण सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति में आर्थिक गतिविधियों का योगदान कम होता है, लेकिन उसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है एवं इससे ग्रामीण सेवा केन्द्रों के सेवा क्षेत्र में भी विस्तार होता है।

शैक्षणिक संस्थान

ग्रामीण सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास में शैक्षणिक संस्थान का काफी योगदान होता है। सामान्यतः ऐसा देखा गया है कि किसी खुले स्थान पर भी (जहाँ परिवहन के अच्छे साधन मौजूद हों), किसी बड़े शैक्षणिक संस्थान (जैसे– +2 माध्यमिक विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय आदि) स्थापित कर दिये जाते हैं तो उस शैक्षणिक संस्थान के आस–पास धीरे–धीरे अन्य सुविधा केन्द्र भी स्थापित होने लगते हैं और अंततः वह केन्द्र एक सेवा केन्द्र के रूप में विकसित हो जाता है। अध्ययन क्षेत्र में स्थित सबसे बड़े ग्रामीण सेवा केन्द्र (ओकरी) इस प्रकार के ग्रामीण सेवा केन्द्र का महत्वपूर्ण उदाहरण है। यहाँ प्राथमिक विद्यालय से लेकर महाविद्यालय तक की शैक्षणिक संस्थान उपलब्ध हैं।

स्वास्थ्य केन्द्र

जब किसी जगह पर स्वास्थ्य केन्द्र स्थापित की जाती है तो वहाँ आस–पास के लोग स्वास्थ्य सेवाओं की प्राप्ति के लिए आते हैं, जिसके कारण वहाँ परिवहन सेवाओं का विकास होता है एवं लोगों के अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दवाखाना, किराना दुकान, चाय–नास्ता की दुकान आदि कई प्रकार की सुविधा केन्द्र प्रारंभ हो जाते हैं और उक्त केन्द्रीय स्थल एक ग्रामीण सेवा केन्द्र के रूप में कार्य करने लगता है एवं यदि पूर्व स्थापित ग्रामीण सेवा केन्द्र में किसी स्वास्थ्य केन्द्र शुरू कर दिया जाता है तो उक्त ग्रामीण सेवा केन्द्र का सेवा क्षेत्र में वृद्धि हो जाता है। इस प्रकार स्पष्टतः कहा जा सकता है कि स्वास्थ्य केन्द्र ग्रामीण सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास दोनों क्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अध्ययन क्षेत्र मोदनगंज में स्थित सात ग्रामीण सेवा केन्द्रों में से छः में स्वास्थ्य केन्द्र उपलब्ध है। ओकरी ग्रामीण सेवा केन्द्र के विकास में स्वास्थ्य केन्द्र का महत्वपूर्ण योगदान है।

(i) प्रशासनिक केन्द्र – प्रशासनिक केन्द्र एक अनिवार्य सुविधाएँ प्रदान कराती है। उक्त प्रशासनिक केन्द्र के प्रभाव क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले सभी लोगों को न चाहते हुए भी उक्त प्रशासनिक केन्द्र में आना अनिवार्य होता है। जिन्हें विभिन्न प्रकार की सेवाएँ प्रदान कराने के लिए अन्य कई प्रकार की सुविधा केन्द्र अस्तित्व में आ जाते हैं और अंततः वह प्रशासनिक केन्द्र एक पूर्ण ग्रामीण सेवा केन्द्र के रूप में उभरकर सामने आता है। मोदनगंज ग्रामीण सेवा केन्द्र इसका सटिक उदाहरण है।

धार्मिक केन्द्र

सामान्यतः बड़े धार्मिक केन्द्र अपने आस–पास के लोगों को आकर्षित करते हें, जिसके कारण वहाँ अन्य सुविधा केन्द्रों की स्थापना होने की संभावनाएँ बढ़ जाती है और अंततः वह धार्मिक केन्द्र अन्य सुविधा केन्द्रों के साथ एक ग्रामीण सेवा केन्द्र के रूप में उभरता है। परंतु अध्ययन क्षेत्र मोदनगंज प्रखण्ड में एक भी ऐसा ग्रामीण सेवा केन्द्र नहीं है, जिसका उत्पत्ति धार्मिक केन्द्रों के कारण हुआ है। पर यह सर्वविदित है कि ग्रामीण सेवा केन्द्रों के विकास में धार्मिक केन्द्रों का महत्वपूर्ण योगदान है।

ग्रामीण सेवा केन्द्रों का सेवित क्षेत्रों पर प्रभाव

ग्रामीण सेवा केन्द्रों के प्रभाव में वहाँ के लोगों का समग्र विकास होता है। यहाँ विभिन्न प्रकार की शहरी सुविधाएँ जैसे–परिवहन एवं संचार के साधन, शैक्षणिक केन्द्र, स्वास्थ्य केन्द्र, प्रशासनिक केन्द्र, बैंकिंग सुविधा केन्द्र, नियमित बाजार इत्यादि उपब्लध होने के कारण लोगों को इन सभी जरूरी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ज्यादा दूर स्थित केन्द्रों पर नहीं निर्भर रहना पड़ता है। जिससे वहाँ के लोगों को समय एवं पैसे की बचत होती है। इसके साथ–साथ लोगों को पास में ही रोजगार मिल जाता है एवं किसान लोगों को कृषि कार्य के लिए आवश्यक वस्तुओं एवं कृषि यंत्रों की खरीदारी तथा कृषि उत्पादों की बिक्री के लिए पास में ही बाजार मिल जाता है तथा नजदीक में ही शैक्षणिक केन्द्र उपलब्ध होने के कारण लोगों को शिक्षा के प्रति रूझान बढ़ता है। इस प्रकार उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट है कि ग्रामीण सेवा केन्द्रों के प्रभाव में सेवित क्षेत्रों का समग्र विकास होता है।

निष्कर्ष

अध्ययन क्षेत्र मोदनगंज प्रखण्ड में ग्रामीण सेवा केन्द्रों का विकास के संदर्भ में किये गये अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति एवं विकास का मूल कारण समान होता है। सेवा केन्द्रों की उत्पत्ति मुख्यतः दो कारणों से होती है, पहला यह कि किसी जगह पर प्रशासनिक केन्द्र, चिकित्सालय, शैक्षणिक संस्थान, बस स्टैण्ड, रेलवे स्टेशन आदि में से एक–दो सुविधाएँ भी उपलब्ध होते हैं तो धीरे–धीरे वहाँ अन्य सुविधा केन्द्र भी स्थापित होने लगते हैं, और वह जगह एक पूर्ण ग्रामीण सेवा केन्द्र के रूप में कार्य करने लगता है। सामान्यतः ऐसे ग्रामीण सेवा केन्द्र की जनसंख्या तुलनात्मक रूप में कम होती है। दूसरा यह कि किसी नवनिर्मित चौक–चौराहे पर या किसी ग्रामीण केन्द्र में साप्ताहिक बाजार, डाकघर, किराना दुकान, हार्डवेयर दुकान, स्टेशनरी दुकान, दवाखाना, साईबर कैफे, नाई–धोबी की दुकान आदि छोटी–मोटी सुविधाएँ प्रदान करने वाले केन्द्रों का आकार, सेवा प्रदान करने की क्षमता आदि में धीरे–धीरे वृद्धि होते रहने के कारण वो ग्रामीण केन्द्र एक पूर्ण ग्रामीण सेवा केन्द्र के रूप में विकसित हो जाता है तथा ग्रामीण सेवा केन्द्रों के प्रभाव में सेवित क्षेत्रों, खासकर ग्रामीण सेवा केन्द्र के लोगों का समग्र विकास को सहयोग मिलता है। हालांकि प्रखण्ड के विकास को गति प्रदान करने के लिए अध्ययन के दौरान सुझाये गये संभावित ग्रामीण सेवा केन्द्रों में अन्य आवश्यक सुविधा केन्द्र स्थापित कर उन्हें पूर्ण ग्रामीण सेवा केन्द्र के रूप में विकसित करने की जरूरत है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *पाठक, गणेश कुमार (1993), "बलिया जनपद (उ०प्र०) के सेवा केन्द्र एवं ग्रामीण विकास में उनका योगदान", अप्रकाशित शोध–प्रबंध, अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद*
2. *सिंह, ओम प्रकाश (1979), "केन्द्र स्थल और उनकी उत्पत्ति तथा विकास", उ०भा०भू० पत्रिका, गोरखपुर, अंक–9, संख्या–1, पृ०–31–32*
3. *कुमार, नागेश (2012), "जहानाबाद जिला में जनसंख्या वृद्धि एवं उसके सामाजिक–आर्थिक परिणाम (1951–2001) : एक भौगोलिक अध्ययन", अप्रकाशित शोध–प्रबंध, पटना विश्वविद्यालय, पटना*
4. *विवेक कुमार (2018), "ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में ग्रामीण सेवा केन्द्रों का योगदान : पटना जिला के धनरूआ प्रखण्ड का एक भौगोलिक अध्ययन", Research Journal of Social and Life Sciences, Vol. XXVI.*
5. *Sinha, V.N.P., Nazim, M., Ahmad, P.F. (2013) : Bihar : Land, People and Economy, Rajesh Publication, New Delhi.*
6. *कुमार, सुमंत (2013) : बिहार के शेखपुरा जिला में ग्रामीण सेवा केन्द्रों का क्षेत्रीय प्रतिरूप, अप्रकाशित शोध–प्रबंन्ध, पटना विश्वविद्यालय, पटना*
7. *District Census Hand Book, Patna, Part-A&B, 2011*
8. *Census of India, 2011*
9. *www.onefivenine.com*